सम्पादकीय साधना की बुनियाद पर ही रखी जा रही है सतयुग की आधारशिला 2

महाकाल की नगरी से हुआ ज्योति कलश यात्राओं का भव्य शुभारम्भ 3

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोहों में दी गईं नारी सशक्तीकरण की प्रेरणाएँ 4

बिहार और झारखण्ड में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञों की शृंखला सम्पन्न 6

देव संस्कृति विश्वविद्यालय आए कई देशों के प्रतिनिधि मण्डल 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

मध्य प्रदेश

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news@awgp.org

1 अप्रैल 2025

वर्ष : 37, अंक : 19

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 मार्च 2025

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

असुरता के अंत के लिए देवत्व को सचेत और संगठित होना होगा

हर व्यक्ति के अंतःकरण में और सामाजिक जीवन में सतत लड़ा जा रहा है देवासुर संग्राम

अंतःकरण का देवासुर संग्राम

मनुष्य के भीतर पाप और पुण्य, दोनों प्रकार के प्रबल संस्कार मौजूद हैं। दोनों की शक्ति प्रचण्ड है, दोनों ही उद्भट योद्धाओं के समान हैं। दोनों एक-दूसरे से प्रतिकूल प्रकृति के होने से परस्पर लड़ते भी रहते हैं और एक-दूसरे को परास्त करने का प्रयत्न भी करते हैं। यही देवासुर संग्राम है। गीता में जिस धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र का वर्णन है और जिस महाभारत में धर्म और अधर्म का पक्ष प्रतिपादन करने वाली कौरव-पांडव सेनाओं का वर्णन हुआ है, वह भी केवल उस शस्त्र युद्ध तक सीमित नहीं है, वरन् हमारे अन्तःकरण में निरन्तर होते रहने वाले देवासुर संग्राम का ही चित्रण है।

अन्तःकरण में रहने वाली शुभ और अशुभ प्रवृत्तियों में से जिसे भी अपने अनुकूल वातावरण मिल जाता है, वही पनपने और बढ़ने लगती है। जिसे पोषण नहीं मिलता वह सूख जाती है। जो व्यक्ति आज बहुत बुरा दिखता है, वह उत्तम परिस्थितियों एवं विचारधारा के सान्निध्य में आने से कल बहुत ही उत्तम प्रकृति का बन सकता है और जिसे आज अच्छा समझा जाता है, वही कल बुरे वातावरण में फँसकर बुरा बन सकता है। इसलिए विचारक सदा से यह कहते आये हैं कि इस संसार में बुरा कोई मनुष्य नहीं, केवल परिस्थितियाँ और भावनाएँ ही बुरी हैं, जिन्हें बदला जा सकता है। मनुष्य का अन्तःकरण लोहे या पत्थर की तरह नहीं है, वह गीली मिट्टी और मोम की तरह है जिसे पिघलाया जा सकता है, बदला जा सकता है।

बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया सामाजिक समरसता का महापर्व

होली पर्व पर चंदन, अबीर का तिलक कर शुभकामनाएँ देते श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेया शैल जीजी

नीचे गाते-बजाते, गुलाल लगाते शान्तिकुञ्ज की गलियों में निकली अंतेवासियों की टोली

(समाचार पृष्ठ 2 पर पढ़ें)

अध्यात्म की आवश्यकता क्यों?

अध्यात्म विद्या का उद्देश्य मानव प्राणी की अन्तःचेतना को पिघला कर श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता के ढाँचे में ढालना है। माना कि पाशविक वृत्तियाँ प्रबल हैं, उनमें आकर्षण और प्रलोभन बहुत हैं, जिससे दुर्बल प्रकृति का जीव अनायास ही उनकी ओर खिंच जाता है, पर उसका अर्थ यह नहीं कि सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाया या परिपुष्ट नहीं किया जा सकता। कार्य थोड़ा कठिन अवश्य है, पर असम्भव किसी भी प्रकार नहीं है। पानी को फैला देने से वह नीचाई की ओर आसानी से बहने लगेगा, पर यदि उसे ऊँचा उठाना हो तो अनेक उपकरण इकट्ठे करने और बल प्रयोग करने से ही वह ऊपर चढ़ेगा। इसी प्रकार मनोवृत्तियों के निम्नगामी प्रवाह को ऊर्ध्वगामी बनाने में श्रम तो करना ही पड़ता है और समय भी लगता है। इसलिए अध्यात्म का मार्ग श्रमसाध्य, समयसाध्य और क्रमिक सफलताओं के साथ पूरा हो सकने वाला माना जाता है।

देवासुर संग्राम में आमतौर से असुर पहली बाजी जीतते हैं, पर देवता जब अपनी बेखबरी और लापरवाही छोड़कर कटिबद्ध होते हैं तो अन्तिम विजय उन्हीं की होती है। पुराणों में वर्णित देवासुर संग्राम की किसी भी कथा को लें, एक ही कथानक मिलेगा-असुर बहुत ही प्रबल हैं, वे मरते दम तक दुस्साहसपूर्ण युद्ध करते हैं, पर चूंकि उनकी सत्ता मूलतः पाप और अज्ञान पर खड़ी होती है, इसलिए वह दुर्बलता ही उन्हें ले बैठती है। देवपक्ष का जैसे ही सुव्यवस्थित आक्रमण शुरू होता है, वैसे ही असुर लड़खड़ा जाते हैं। देवताओं में लापरवाही की, विसंगठित रहने की जो कमी है, वही उन्हें असुरों से हराती रहती है। जब वे अपनी इस भूल को समझ जाते हैं और छोड़ देने को तत्पर होते हैं तो उनकी विजय निश्चित हो जाती है।

ऋषि-मुनियों को तभी तक लंका के निशिचर मारते-खाते रहे, जब तक कि वे अलग-अलग अपनी-अपनी कुटियों में जप-तप करते रहे, पर जब संगठित प्रतिरोध का अभियान आरम्भ हुआ तो रींछ-बन्दरों की सेना ने लंका को तहस-नहस कर दिया। शुंभ-निशुंभ असुरों की सेना से देवता परास्त हो रहे थे। जब ब्रह्माजी ने यह देखा तो उन देवताओं के शरीरों से थोड़ी-थोड़ी शक्ति निकाल कर उससे संघ-शक्ति 'दुर्गा' की रचना कर दी और उस दुर्गा ने देखते-देखते उन भयंकर असुरों को मार गिराया।

हम भूले हैं, कमजोर नहीं

देवत्व हर व्यक्ति के अन्तःकरण में पर्याप्त मात्रा में मौजूद है, पर वह प्रसुप्त और बिखरा हुआ पड़ा रहता है, उसे अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं होता। लंका लाँघने से पहले हनुमान को अपने ऊपर विश्वास नहीं हो रहा था, तब जामवंत ने प्रोत्साहन देकर उन्हें छलाँग लगाने के लिए उकसाया और वे समुद्र लाँघने में पूर्णतया सफल रहे। अर्जुन भी दोनों सेनाओं के बीच खड़ा हुआ काँप रहा था, धनुष उसके हाथों से छूटा रहा था और कुछ सूझ न पड़ता था। कृष्ण ने उसे आवश्यक ज्ञान और प्रोत्साहन दिया तो पार्थ की भुजाएँ फड़कने लगीं। गांडीव उठा कर उसने ऐसा घनघोर युद्ध किया कि कौरवों की समुद्र-सी उमड़ती सेना अस्त-व्यस्त हो गई।

देवत्व के पीछे सत्य है, धर्म है, स्थायित्व है, इसलिए इनके पास स्वल्प साधन होते हुए भी जीत अन्त में उन्हीं की निश्चित रहती है। असफलता तो उन्हें तभी तक मिलती है जब तक वे असंगठित और अव्यवस्थित रहते हैं। यह दो दुर्गुण ही उन्हें संकटों में फँसाते हैं। भूल और बुराई का दण्ड तो सभी को भोगना पड़ता है। देवता भी उससे कैसे बच सकते हैं? लापरवाही, आलस, प्रमाद और उपेक्षा जहाँ कहीं भी होगी, वहाँ देर-सबेर विपत्ति अवश्य आयेगी।

सुख-शान्ति के लिए लड़ना ही पड़ेगा

मनुष्य के शरीर में न अच्छाई है, न बुराई। उसकी भीतरी स्थिति ही बाह्य जीवन में फूटती रहती है। इस आन्तरिक स्तर को सुधारने और सँभालने का कार्य जिस प्रक्रिया द्वारा होना सम्भव है, उसे ही अध्यात्म नाम से पुकारा जाता है। अध्यात्म का उद्देश्य मनुष्य को पाप और कुविचारों की असुरता से छुड़ाकर सत्य और धर्म की सुख-शान्तिमयी गोदी में पहुँचा देने का है।

यह सोचना गलती है कि धर्म को अपनाने से हम घाटे में रहेंगे। जिस धर्म को अपनाने से मनुष्य घाटे में रहे, वह सच्चा धर्म नहीं कहा जा सकता। आजकल धर्म के नाम पर जो अस्वाभाविक आडम्बर पुज रहा है, उसके बारे में यह सोचना तो ठीक है, पर असली धर्म तो पारलौकिक और इहलौकिक दोनों ही सुखों का साधन जुटाता है।

प्राचीनकाल में जब घर-घर धर्म की प्रतिष्ठा रहती थी, तब भारत में घर-घर धन-वैभव, बल-पुरुषार्थ, विद्या-बुद्धि, स्नेह-सौजन्य, आनन्द-उल्लास का वातावरण था। आज जब समाज में अधर्ममूलक विचारधारा और कार्यप्रणाली बढ़ी है तो घर-घर में अभाव, दारिद्र्य, रोग-शोक, कलह-क्लेश, अज्ञान-अविवेक, ईर्ष्या-द्वेष, अहंकार से विनिर्मित नारकीय दृश्य दिखाई देते हैं।

वैयक्तिक जीवन में हमारी अन्तः चेतना असुरता की अन्धकारपूर्ण पाशविक प्रवृत्तियों से भरी हुई है, फलस्वरूप मनुष्य शरीर पाकर भी हम घृणित श्रेणी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसी प्रकार सामाजिक जीवन में भी अनाचार का वातावरण प्रबल होता जाता है, जिसके फलस्वरूप स्वास्थ्य, अर्थ व्यवस्था, समाज, राजनीति, पारस्परिक सम्बन्ध, नैतिकता और कर्तव्यपालन, उत्पादन और उद्योग; प्रत्येक क्षेत्र में संकट उत्पन्न हो रहे हैं और चारों ओर अशान्ति की काली घटाएँ घुमड़ती हुई दिखाई पड़ती हैं। असुरता की प्रबलता जहाँ कहीं भी होगी, वहाँ आपत्तियाँ ही बढ़ेंगी। सुख-शान्ति तो देवत्व के साथ ही अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। यदि हमें अपना व्यक्तिगत जीवन सुखी और सामाजिक जीवन शान्तिमय देखना हो तो उसका एक ही उपाय रह जाता है-असुरता को परास्त करके देवत्व की अभिवृद्धि करना। असुरता जब तक हारेगी नहीं, तब तक अशान्ति का मिट सकना किस प्रकार सम्भव होगा?

देवासुर संग्राम पौराणिक काल में भी चलता था। आज भी व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में यह लड़ाई प्रचंड गति से चल रही है। इसी का नाम विश्व संकट है। यदि यह विश्व संकट हमें सचमुच ही अप्रिय लगता है, तो फिर उस असुरता को परास्त करने के लिए हम क्यों तत्पर नहीं होते जो मानव जाति के ऊपर आई हुई विश्वव्यापी आपत्तियों का एक मात्र कारण है?

वाङ्मय (अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व), पृष्ठ 5.22 से संकलित, सम्पादित

साधना की बुनियाद पर ही रखी जा रही है सतयुग की आधारशिला

आज राष्ट्र को देव संस्कृति का गौरव बढ़ाने वाले अग्रदूतों की आवश्यकता है

हमारी साधना कैसी हो?

अखण्ड ज्योति के फरवरी और मार्च-2025 के अंकों में 'अपनों से अपनी बात' स्तंभ के माध्यम से जन्मशताब्दी वर्ष के अगले चरणों की कार्ययोजना स्पष्ट होने लगी है। तद्नुसार अगले वर्ष से नवयुग की गंगोत्री शान्तिकुञ्ज और देश की चारों दिशाओं में विशाल साधना-पूर्णाहुति समारोहों का आयोजन आरंभ होना है। दोनों लेखों से स्पष्ट है कि इन कार्यक्रमों में युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित युग साधकों की ही प्रमुख भूमिका होगी। उनके द्वारा किये जाने वाले साधना अनुष्ठानों की पूर्णाहुति के साथ आगामी सन् 2026 से 2050 तक के 24 वर्षीय सामूहिक तपोनुष्ठान का शुभारंभ होने जा रहा है। परम पूज्य गुरुदेव की सन् 1926 से 1950 तक की 24 गायत्री महापुरश्चरणों की विशिष्ट साधना का प्रथम लक्ष्य विश्व की भौगोलिक रूपरेखा में आमूलचूल परिवर्तन था। परिवर्तन के अगले चरण में अब ठीक 100 वर्ष बाद एक प्रचण्ड सामूहिक साधना महापुरश्चरण के माध्यम से नए युग की आध्यात्मिक रूपरेखा का आधार सुनिश्चित करने का संकल्प उभरा है। विचारणीय है कि इस विशिष्ट प्रयोजन के लिए की जाने वाली हमारी साधना कैसी हो?

सन् 1926 में हुई तीन विशेष घटनाएँ घटित हुईं। 1. परम पूज्य गुरुदेव को सद्गुरुदेव की प्राप्ति और उनके माध्यम से आत्मस्वरूप का बोध होना। 2. 'करिष्ये वचनं तव' के भाव के साथ परमात्मस्वरूप अपनी गुरुसत्ता के प्रति पूर्ण समर्पण और अखण्ड, अटूट संकल्प के प्रतीक 'अखण्ड दीप' का प्राकट्य। 3. परमात्मा के संकल्प की सिद्धि के लिए आवश्यक सहयोग, शक्ति अनुदान लेकर शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी का अवतरण। इन दिनों हम तीनों ही युगांतरीय घटनाओं की शताब्दी मना रहे हैं।

जन्मशताब्दी वर्ष की हमारी कार्ययोजना 'अखण्ड ज्योति' को 'प्रचण्ड ज्योति' में परिवर्तित करने के महान लक्ष्य के साथ चल रही है। इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि हम उपरोक्त घटनाओं को केवल स्थूल दृष्टि से न देखें, बल्कि उन घटनाओं के मर्म को समझें। युग परिवर्तन जैसे महान प्रयोजन की सिद्धि के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने 100 वर्ष पूर्व जो तप साधना का मार्ग अपनाया था, आज उसी मार्ग पर चलते हुए अपने आराध्यदेव के संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाने की आवश्यकता है। जन्मशताब्दी वर्ष के समारोहों के लिए की जाने वाली हमारी साधना मात्र कर्मकाण्ड न रह जाए, बल्कि इस साधना के माध्यम से अपने व्यक्तित्व के परिष्कार, परिवार व समाज के नवनिर्माण तथा राष्ट्र-संस्कृति के अभ्युदय के लिए साहसी कदम बढ़ाये जा सकें, इसी में हमारी युग साधना की सार्थकता है।

आत्मबोध

हम सब भलीभाँति जानते हैं कि वसंत पंचमी-1926 के दिन दादा गुरुदेव स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी ने 15 वर्षीय मनस्वी, तेजस्वी साधक श्रीराम को आत्मबोध कराने के लिए प्रकाश/छाया शरीर में दर्शन दिये थे। उन्हें कई जन्मों की उनकी संचित आध्यात्मिक संपदा का बोध कराते हुए वर्तमान जीवन का लक्ष्य बताया था और उसकी सिद्धि के लिए कार्ययोजना निर्धारित की थी। भगवान के, संत-सिद्धों के अनुदान, वरदान से हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हों, हमारे जीवन में सुख-समृद्धि बढ़े, यही तो एक सामान्य व्यक्ति की इच्छा हुआ करती है, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव के जीवन में भगवान सारी सुख-सुविधाओं को त्याग कर मानवता के कल्याण के लिए तपस्वी जीवन जीने का संदेश देने आए थे।

परम पूज्य गुरुदेव ने हमें भी बार-बार आत्मबोध कराते हुए कुछ ऐसा ही संदेश दिया है। हम उसे कितना अनुभव और हृदयंगम कर पा रहे हैं, इस पर हमें चिंतन करना है। वे कहते रहे हैं कि हम सामान्य व्यक्ति नहीं हैं, जन्म-जन्मांतरों से युग परिवर्तन के महान प्रयोजन में भगवान का साथ देती रहने वाली दिव्य आत्माएँ हैं। हम आए नहीं, बुलाए गए हैं। इन दिनों हमें एक विशेष प्रयोजन के लिए संगठित किया गया है। जिसे इस सत्य और तथ्य का बोध हो जाएगा, वह निःसंदेह अपनी व्यक्तिगत इच्छा-आकांक्षाओं को पूरा करने में ही जीवन खपाना नहीं चाहेगा। वह भगवान के साथ साझेदारी के लिए मिले दुर्लभ सौभाग्य से वंचित क्यों रहेगा? जिन्हें यह आत्मबोध हो जाता है, उनके लिए सारा समाज और राष्ट्र ही भगवान का विराट रूप हो जाता है। उनके जीवन का हर पल भगवान की पूजा-आराधना बन जाता है। उनका जीवन धन्य हो जाता है ।

शताब्दी वर्ष की विशेष साधना

शताब्दी वर्ष समारोहों के निमित्त की जाने वाली विशेष अनुष्ठान साधनाएँ अखण्ड ज्योति को प्रचण्ड ज्योति में परिवर्तित करने के संकल्प के साथ की जानी है। 100 वर्ष पूर्व परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रज्वलित अखण्ड ज्योति मात्र एक दीपक नहीं है। उसके विषय में मार्च-2025 की अखण्ड ज्योति पत्रिका में लिखा है, *''अखण्ड ज्योति इस धरा पर युग परिवर्तन के लिए अवतरित होने वाली शक्ति का स्रोत है। यह परम पूज्य गुरुदेव की आध्यात्मिक चेतना का प्रथम स्फुटन है। इसमें समष्टि चेतना के संदोहन और व्यष्टि चेतना के संवर्द्धन की असीम ऊर्जा समाहित है।''*

जन्मशताब्दी के विशिष्ट साधना क्रम में अखण्ड ज्योति की यह दिव्य चेतना हम सबके अंतःकरण में घनीभूत होनी चाहिए। यह कार्य अनुष्ठान में मात्र जप संख्या पूरी कर लेने या पूजा का निर्धारित कर्मकाण्ड पूरा कर लेने से संभव नहीं है। परम पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रचण्ड तप से पूरे विश्व को आलोकित किया है, तो अपने गली-मोहल्ले को रोशन करने वाले प्रकाश स्तंभ बनने की उमंग हमारे भीतर भी उठनी चाहिए। वे वेदमूर्ति हैं, तो वेददूत बनकर घर-घर जाने और उनके ज्ञान का प्रकाश बाँटने का उत्साह हम सबके मनों में भी उभरना चाहिए।

आज समाज में उपदेशकों, कथावाचकों, कर्मकाण्डियों की भरमार है। आवश्यकता है स्वामी विवेकानन्द, परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, गाँधी, गोखले, शिवाजी, महाराणा प्रताप, शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसे महामानवों की, जो वाणी से नहीं अपने व्यक्तित्व से लोगों का सही मार्गदर्शन कर सकें। ऐसे जीवन-दीपों की आवश्यकता है, जिन्हें देखकर लोग अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सकें।

आज भौतिकवाद अपने चरम पर है। हर व्यक्ति स्वार्थ-संकीर्णता से ग्रसित दिखाई देता है। अंधविश्वास एवं मूढ़मान्यताओं ने मानवीय विवेक को कुंठित कर रखा है। अहंकार और प्रदर्शन ने भस्मासुर का रूप धारण कर रखा है। जीवन की आवश्यकताएँ स्वल्प हैं, लेकिन बड़प्पन की आकांक्षाओं ने सुरसा की तरह मुँह फाड़ रखा है। इन प्रतिकूलताओं के बीच विवेक और आदर्शों को अपनाना ही सच्ची जीवन साधना है।

अपने हृदय के किवाड़ खोलें

मार्च-2025 की अखण्ड ज्योति पत्रिका में 'अखण्ड ज्योति' में प्रतिष्ठित आध्यात्मिक सत्ता के सच्चे उत्तराधिकारी बनने का आह्वान भी किया गया है। लिखा गया है, *''यह सौभाग्य उसी के लिए बन पड़ता है, जिसके हृदय के किवाड़ खुले हैं। श्रद्धा, प्रेम, समर्पण यही कसौटी है और हम सभी की पात्रता का मानदण्ड भी है। सुपात्रता को विकसित करने वाली इन तीनों क्षमताओं का प्राकट्य हृदय-क्षेत्र के धरातल पर ही संभव होता है। इसका शिक्षण और प्रेरणाएँ पूज्य गुरुदेव के जीवन और विचारों में सर्वत्र व्याप्त है।''*

अध्यात्म की राह आसान नहीं है। इस पर चलने वालों को साहसी कदम बढ़ाने होते हैं। परम पूज्य गुरुदेव की भाँति पतनोन्मुख प्रवाह को चीर कर आदर्शोन्मुख जीवन पथ अपनाना होता है। मनःक्षेत्र के अंतर्द्वंद्वों से जूझना होता है। पारिवारिक एवं सामाजिक दबावों को झेलना होता है। इन सबके लिए जिस प्रचण्ड आत्मबल की आवश्यकता होती है, उसे प्राप्त करने के लिए ही जप, तप, पूजा, प्रार्थना, साधना, अनुष्ठानों का विधान रचा गया है। साधना से ही जीवन में पात्रता की तीनों कसौटियाँ- **श्रद्धा, प्रेम, समर्पण** का विकास होता है। जैसे परम पूज्य गुरुदेव के संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाने के लिए धरा पर शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी का अवतरण हुआ, उसी प्रकार युग साधकों के जीवन में उनके संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाने के लिए मातृशक्ति का अवतरण श्रद्धा, प्रेम, समर्पणभाव के रूप में ही होता है और होगा भी। प्रश्न यही है कि हम अपने संकल्प की सिद्धि के लिए कितने साहसी कदम बढ़ा पाते हैं, अपनी जीवन साधना का क्या क्रम अपनाते हैं?

समय की माँग है कि हम अखण्ड ज्योति के सच्चे उत्तराधिकारी बनें। परम पूज्य गुरुदेव के 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सूत्र को अपनाएँ। साधन-सम्पदा की प्रचुरता के बावजूद ऐसा ब्राह्मणोचित जीवन पथ अपनाएँ, जो समाज के लिए अनुकरणीय हो। अपनी धन-सम्पदा को समाज की धरोहर मानते हुए उसका सदुपयोग समाज के उत्थान के लिए करें। इसी में हमारे शिष्यत्व की सार्थकता है। यही समय की माँग है।

नवयुग के अवतरण के लिए जो दिव्य भाव और संकल्प परम पूज्य गुरुदेव के अंतःकरण में प्रस्फुटित हुए थे, वही भाव अखण्ड दीप की जन्मशताब्दी पर हजारों, लाखों युग सेनानियों के मनों में उभरें, तभी अखण्ड ज्योति प्रचण्ड ज्योति में परिवर्तित हो सकेगी। साधना की बुनियाद पर ही रखी जायेगी सतयुग की आधार शिला। शताब्दी वर्ष के विशिष्ट समारोहों के साथ ऐसे ही जीवन-साधकों के सामूहिक पुरुषार्थ से 24 वर्षीय तपोनुष्ठान आरंभ होने जा रहा है, जिसके प्रभाव से सतयुग साकार होकर रहेगा। देखना यही है कि भगवान के साथ साझेदारी के दुर्लभ सुयोग का हम कितना लाभ उठा पाते हैं?

होली मनी सादगी और उल्लास के संग, न था कहीं कोई हुड़दंग

धूलि वंदन के दिन शान्तिकुञ्ज में सजा हास-परिहास का मंच, मस्ती में झूमते विदेशी मेहमान और एक-दूसरे को गुलाल लगाकर होली मनाती शिविरार्थी बहिनें

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर में मनाया गया रंगारंग होली-उत्सव अत्यंत सादगीपूर्ण, अनुशासित किन्तु उमंग-उल्लास से भरापूरा था। होलिका दहन के अवसर पर ऑनलाइन प्रसारित पर्व पूजन के कर्मकाण्ड के साथ 'व्यसनमुक्त भारत' के निर्माण की प्रेरणाएँ दी गईं। रूसी एवं कुछ अन्य देशों से मेहमानों के साथ हजारों श्रद्धालु-साधक होलिका दहन के प्रेरणाप्रद समारोह के साक्षी बने।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेया शैलदीदी ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ होली महापर्व का पूजन सम्पन्न किया।

सामाजिक समरसता का महापर्व है होली। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

इस अवसर पर श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि होली जाति, वर्ग, भाषा, प्रान्त, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर जैसे हर तरह के भेदभाव को मिटाकर सामाजिक समरसता एवं सद्भावना बढ़ाने वाला पर्व है। स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने होली पर्व से प्रेरणा लेकर तमाम सामाजिक, मानसिक बुराईयों एवं परस्पर के वैरभाव को मिटाकर जीवन में सकारात्मकता, सहयोग की भावना बढ़ाने और भक्त प्रहलाद की तरह ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्थावान रहकर लोकमंगल के लिए समर्पित रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि होली के रंग जीवन को सदैव आनन्द और उल्लासयुक्त बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं।

धूलिवंदन-रंगोत्सव के दिन श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने सभी को चंदन और अबीर का तिलक लगाकर अपनी शुभकामनाएँ दीं।

इससे पूर्व होली महापर्व के अवसर पर आयोजित सामूहिक जप में सैकड़ों लोगों ने भागीदारी की और भारत को व्यसन मुक्त बनाने हेतु प्रार्थना की। वहीं इस अवसर पर संगीत विभाग के भाइयों ने होली पर्व के गीत व भजन प्रस्तुत किये। इस अवसर पर व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी जी, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सहित देश-विदेश से आये साधकगण और शान्तिकुञ्ज, देसंविवि. के हजारों लोग उपस्थित रहे।

सेवा, सद्भाव के अनुकरणीय आदर्श

थैलेसीमिया पीड़ित रोगी के लिए अंशुल जी ने 17वीं बार किया रक्तदान

जबलपुर। मध्य प्रदेश
थैलेसीमिया से ग्रसित चंदन ठाकुर को हर महीने एक यूनिट रक्त की आवश्यकता होती है। गायत्री परिवार की श्रीमती अंशुल जी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर चि. चंदन ठाकुर के लिए 17वीं बार रक्तदान कर सेवा का एक आदर्श प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उन्होंने पति, बेटी और दामाद से भी रक्तदान कराने का आश्वासन दिया, जिससे जरूरतमंदों को समय पर रक्त उपलब्ध कराया जा सके।

गायत्री परिवार जबलपुर ने रक्तदान को महादान बताते हुए सभी समाजसेवियों से इस पुनीत कार्य में बढ़चढ़कर योगदान देने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना | **191 जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्पन्न कराया**

मार्मिक प्रेरणाओं से नम हो गईं वर-वधुओं की आँखें

सतना। मध्य प्रदेश
1 मार्च 2025 को गायत्री परिवार सतना द्वारा मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत 191 जोड़ों का विवाह गायत्री परिवार की आदर्श परम्पराओं के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में गायत्री परिवार के 10 पुरोहितों और सतना, कटनी, नागौद, ऊँचेहरा, जैतवारा तथा रामपुर बघेलान से आए 50 से अधिक कार्यकर्त्ताओं का सहयोग रहा।

गायत्री परिवार द्वारा प्रस्तुत विवाह के संस्कार प्रधान गीतों और मार्मिक टिप्पणियों ने सभी को बहुत प्रभावित किया, कई वर-वधुओं की आँखें नम हो गईं। गायत्री परिवार सतना के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री मनोज कुमार पांडेय ने बताया कि विवाह में उपस्थित परिजनों ने विवाह पद्धति को लेकर अत्यंत संतोष व्यक्त किया। विवाह के उपरांत हर नवदंपती को गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता हेतु आवश्यक सत्साहित्य का सेट निःशुल्क भेंट किया गया।

कार्यक्रम में माननीय राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी जी और महापौर श्री योगेश ताम्रकार जी उपस्थित रहे। उन्होंने सभी वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध मानकर परिवार का प्रेरक कदम

मृतक भोज नहीं, श्रद्धांजलि सभा में आए लोगों को सत्साहित्य भेंट किया

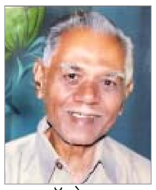
स्व. डॉ. केशव राव

मुलताई। मध्य प्रदेश
स्वर्गीय डॉ. केशव राव मानकर जीवनपर्यंत गायत्री परिवार से जुड़े रहे और समाज में व्याप्त रूढ़ियों का विरोध करते रहे। उनकी इच्छानुसार उनके परिवार ने उनकी तेरहवीं में मृत्युभोज की जगह मात्र श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर समाज को नई दिशा-प्रेरणा दी। श्रद्धांजलि सभा में परिवारी जनों के अलावा अनेक समाजसेवी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। सभी को परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित सद्साहित्य भेंट किया गया।

श्रद्धांजिल सभा में दी जा रही युगऋषि की प्रगतिशील प्रेरणाएँ

गायत्री मंदिर को 51,000 रुपये की भेंट

स्व. डॉ. केशव राव मानकर की पत्नी श्रीमती लीला ताई मानकर, पुत्र सचिन मानकर एवं डॉ. ज्ञानदेव मानकर ने समाज में वैचारिक क्रांति लाने और कुरीतियों को समाप्त करने के गायत्री परिवार के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के भाव के साथ गायत्री मंदिर को 51,000 रुपये की धनराशि भी भेंट की। दिवंगत देवात्मा की स्मृति में आम का एक पौधा भी लगाया गया।

वनवासी उत्कर्ष के लिए गायत्री शक्तिपीठ को मिला राष्ट्रीय सम्मान

डेमनिया बाबा और उनके अनुयायियों की प्रेरणा से लाखों वनवासियों ने व्यसन-मांसाहार त्यागकर यज्ञोपवीत धारण किया और गायत्री उपासक बने हैं।

बड़वानी। मध्य प्रदेश : अनुसूचित जनजाति आयोग, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अन्तरसिंह आर्य ने गायत्री शक्तिपीठ साली टांडा को आदिवासी समाज के उत्थान के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री नरेंद्र डावर और रूप सिंह बाबा को आदिवासी समाज में कुरीति उन्मूलन, नशा मुक्ति अभियान और गायत्री साधना संकल्प जैसे प्रयासों के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। उन्हें अंगवस्त्र, दीवार घड़ी और श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

शक्तिपीठ प्रतिनिधियों को सम्मानित करते अनुसूचित जनजाति आयोग, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अन्तरसिंह आर्य

गायत्री शक्तिपीठ साली टांडा के संस्थापक, परम पूज्य गुरुदेव के निषादराज स्व. डेमनिया बाबा ने मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के लाखों वनवासियों का जीवन बदला है। उन्हें नशा, मांसाहार जैसी कुरीतियों से मुक्त कर गायत्री उपासक बनाया है। 40 वर्षों से चली आ रही शक्तिपीठ की यह परम्परा आज भी उसी उत्साह के साथ चल रही है।

अंशदान से आत्मविकास और सेवाभाव की प्रेरणादायी पहल

धार। मध्य प्रदेश : ग्राम लोणी (तहसील कुक्षी) में प्रज्ञा महिला मंडल की बहिनों ने एक रुपया प्रतिदिन के अंशदान से लोगों में सामाजिक जागरूकता और लोकमंगल की अभीप्सा जगाने का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत किया है। गाँव की 35 से 40 बहिनें यह नियमित अंशदान एकत्रित करती हैं और उसे अपनी शाखा के सशक्तीकरण के साथ क्षेत्रीय गतिविधियों के प्रोत्साहन में योगदान के साथ गुरुदक्षिणा, जरूरतमंदों की सेवा जैसे कार्यों में लगाती हैं।

अंशदान की राशि भले ही स्वल्प हो, लेकिन उनकी नियमितता से आत्मोत्थान, परिवार, समाज, राष्ट्र निर्माण में योगदान की भावनाओं का सतत पोषण हो रहा है। यह हर गाँव, मण्डल, समाज के लिए एक प्रेरणादायी पहल कही जा सकती है।

महाकाल की नगरी से हुआ ज्योति कलश यात्राओं का भव्य शुभारंभ

55 जिलों के 260 प्रतिनिधि उपस्थित रहे

उज्जैन। मध्य प्रदेश
महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर एक ओर प्रयागराज में गंगा, यमुना, सरस्वती की त्रिवेणी के पवित्र जल से विश्व के करोड़ों लोगों की सनातन आस्था को अभिसिंचित करने का अभूतपूर्व अनुष्ठान सम्पन्न हुआ तो दूसरी ओर उसी दिन महाकाल की नगरी उज्जैन से पाँच ज्योति कलश रथ यात्राओं का भव्य शुभारंभ हुआ। यह ज्योति कलश यात्राएँ मध्य प्रदेश के 55 जिलों में नगर-नगर, गाँव-गाँव, घर-घर तक अखण्ड दीप का दिव्य आलोक तथा मातृसंवेदनाओं से ओतप्रोत परम पूज्य गुरुदेव का ज्ञानामृत पहुँचायेंगी।

उज्जैन में ज्योति कलश यात्राओं के शुभारंभ के लिए 25, 26 फरवरी 2025 (महाशिवरात्रि) की तिथियों में दो दिवसीय प्रांतीय संगठन कार्यशाला का आयोजन किया गया था। मध्य प्रदेश के सभी 55 जिलों से आए 260 भाई-बहिनों की उपस्थिति में ज्योति कलश रथ यात्रा संचालन संबंधी कार्ययोजनाओं पर चर्चा हुई। प्रदेश में दो बहिनों श्रीमती ओझा, ग्वालियर और श्रीमती बबली धाकड़, रायसेन ने जिला समन्वयक का दायित्व सँभालते हुए कार्यशाला में भागीदारी की।

मध्य प्रदेश जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुलमी, भोपाल जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल, युवा प्रकोष्ठ प्रदेश प्रभारी श्री विवेक चौधरी, शिक्षा आंदोलन समन्वयक श्रीयुत् श्रीकृष्ण शर्मा, गौलोक धाम सेंधवा के संचालक पं. मेवालाल जी, उज्जैन उपजोन समन्वयक श्री महेश आचार्य एवं गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन के व्यवस्थापक श्री जे.पी. यादव द्वारा दीप प्रज्वलन, देव पूजन के साथ कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

शक्तिपीठ के गर्भगृह में ज्योति कलशों का प्रथम पूजन करते श्री जगदीश कुल्मी दम्पति, श्री राजेश पटेल व श्री मेवालाल जी

श्री कुलमी जी ने युग परिवर्तन के लिए सक्रिय अग्रदूतों को विश्वास दिलाया कि युग परिवर्तन महाकाल का उदघोष है, जो पूरा होकर रहेगा। उन्होंने पाँच शक्ति कलशों को महाकाल के पाँच वीरभद्र बताया, जो गुरुदेव के प्रखर तप, वंदनीया माताजी के अपनत्व और अखंड दीप के दिव्य आलोक की त्रिवेणी को प्रदेश के जनमानस तक पहुँचायेंगे।

सक्रियता का सम्मान : इस कार्यशाला में पिछले वर्ष के लक्ष्यों को समय सीमा में पूर्ण करने वाले उपजोन समन्वयकों और जिला समन्वयकों का अभिनंदन किया गया। नव गठित प्रदेश मीडिया समिति समन्वयक श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, सह समन्वयक श्री महेंद्र भावसार एवं श्री रमेश नागर जी का परिचय भी कराया गया।

शोभायात्रा के साथ हुआ शुभारंभ

भावविभोर कर देने वाले स्नेहसलिला परम वंदनीया माताजी के संस्मरण सुनाए

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुलमी जी एवं उनकी धर्मपत्नी गायत्री जी ने सर्वप्रथम गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन के दिव्य गर्भगृह में स्थापित ज्योति कलशों का पूजन किया। तत्पश्चात् उन ज्योति कलशों को बहिनों के मस्तक पर धारण करा कर शंखनाद करते हुए अंकपात द्वार तक भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में लगभग 750 भाई-बहिनों की उपस्थिति रही। यहीं से पाँच सुसज्जित रथों पर ज्योति कलशों को प्रतिष्ठित कर उन्हें विविध क्षेत्रों में रवाना किया गया। इस अवसर पर देवास से आईं स्नेहसलिला परम वंदनीया माताजी का निकट सान्निध्य प्राप्त सुश्री दुर्गा समाधिया जी ने माताजी के जीवन के मार्मिक संस्मरण सुनाते हुए बताया कि माताजी स्वयं अवतारी सत्ता थीं।

दिव्य शंखनाद

ज्योति कलश यात्राओं का शुभारंभ 130 से अधिक भाई-बहिनों द्वारा दिव्य शंखनाद से हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने ज्योति कलश रथों को हरी झंडी दिखाई।

गायत्री शक्तिपीठ देवास में भव्य स्वागत

महाशिवरात्रि के दिन उज्जैन से रवाना होने के बाद ज्योति कलश रथयात्रा देवास जिले में पहुँची। गायत्री शक्तिपीठ देवास में दिव्य ज्योति कलश का बड़े हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया, जहाँ बहिनों ने ज्योति कलश की आरती उतारकर सबके मंगल जीवन की प्रार्थना की। गायत्री परिवार के श्री कन्हैयालाल मोहरी एवं श्री रमेशचन्द्र मोदी के नेतृत्व में ग्राम सुखलिया और सुनवानी महाकाल में रथ यात्रा का सफल आयोजन किया गया। गायत्री शक्तिपीठ की टोली द्वारा सुनवानी महाकाल में शानदार संगीतममय दीपयज्ञ किया गया। देवास जिले में यह ज्योति कलश रथयात्रा 5 मार्च 2025 तक गाँव-गाँव युगऋषि का संदेश पहुँचाती रही।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोहों में दी गईं नारी सशक्तीकरण की प्रेरणाएँ

जन्मशताब्दी वर्ष में विशेष सक्रियता अपनाने का आह्वान

युग निर्माण योजना की आधार है नारी - श्रीमती गीता डोंगरे

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ, मनमोहन नगर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। महिला प्रकोष्ठ प्रभारी श्रीमती गीता डोंगरे ने इसे संबोधित करते हुए युग निर्माण

योजना में नारी शक्ति के गौरवशाली योगदान का स्मरण कराया। उन्होंने परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष के विशेष परिप्रेक्ष्य में इस भूमिका को और अधिक उत्साह के साथ गौरवान्वित करने का आह्वान किया। ट्रस्ट मंडल की ओर से श्रीमती कविता तिवारी ने बहिनों द्वारा किए जा रहे विविध कार्यों की आख्या प्रस्तुत की।

संस्कारधानी के विभिन्न क्षेत्रों से आई महिला प्रतिनिधियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए गीत-गायन, काव्य-पाठ किया। श्रीमती दीप्ति मिश्रा, श्रीमती ममता चौरे द्वारा मातृ वंदना एवं प्रेरणाप्रद गीतों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती स्नेहलता सांवरे ने किया। व्यवस्था मंडल की ओर से सभी को क्रांतिधर्मी साहित्य उपहार स्वरूप दिया गया।

स्वास्थ्य एवं साधना अभियान के प्रति जागरूकता बढ़ाई

नवरात्र में 1008 बहिनों से करायेंगी विविध साधनाएँ

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन में महिला जागृति सम्मेलन का आयोजन हुआ। श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव, प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ ने बहिनों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए अपने वजन और खानपान पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी के आह्वान का स्मरण कराते हुए घर में तेल की खपत 20% कम करने की प्रेरणा दी। बड़ी संख्या में महिलाओं ने शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य सुधार और परिवार में साधनात्मक वातावरण निर्माण का संकल्प लिया।

स्वास्थ्य जागरूकता के संकल्प दिलाती बहिनें

कार्यक्रम में गायत्री परिवार उज्जैन की वरिष्ठ परिजन श्रीमती माधुरी सोलंकी ने आगामी नवरात्रि में 1008 से अधिक बहिनों को गायत्री मंत्र जप, लेखन व चालीसा पाठ से जोड़ने का अभियान चलाने का आह्वान किया। इस उद्देश्य से मंत्र लेखन पुस्तिकाओं का भी वितरण किया गया। डॉ. प्रतिभा शर्मा ने कहा कि महिलाओं को 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' के उद्घोष को ध्यान में रखते हुए साधना और सेवा के संकल्पों के साथ आत्मबल और आत्मविश्वास बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए।

नारीशक्ति के युग निर्माणी आदर्श का अभिनन्दन

देवास। मध्य प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के शुभ अवसर पर गायत्री प्रज्ञापीठ, विजय नगर, देवास में नारीशक्ति के युग निर्माणी आदर्श के रूप में आदरणीया दुर्गा दीदी का शॉल और श्रीफल से अभिनंदन किया गया। सुश्री दुर्गा समाधिया जी ने सभी को स्नेहाशीष प्रदान करते हुए जीवन में अधिक से अधिक गुरुनिष्ठा और सेवा भावना को समाहित करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में प्रज्ञापीठ की वरिष्ठ महिला सदस्यों श्रीमती अयोध्या दुबे, श्रीमती सुशीला परमार, श्रीमती अन्नू चौहान, श्रीमती मंजूला सोनी, कांति चौहान, गिरिजा शर्मा, चंचल यादव और स्नेहलता पोरवाल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

गुरुनिष्ठा और मिशन के प्रति सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत करने वाली सुश्री दुर्गा समाधिया जी का अभिनन्दन करते देवास के कार्यकर्ता भाई-बहिन

योग कर मनाया महिला दिवस

गायत्री प्रज्ञापीठ विजयनगर में महिला दिवस के उपलक्ष्य में योग की सदस्यों द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि हर्षा तिवारी ने बहिनों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ, सबल रहने के लिए अनुलोम विलोम, कपालभाति, भ्रामरी आदि प्राणायाम तथा विविध योगासन करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि शरीर में किसी भी प्रकार के दर्द या असुविधा को योग के माध्यम से किस प्रकार कम किया जा सकता है।

कार्यक्रम में रागिनी गौड़, संध्या तिवारी, अनु चौहान, निशा चौहान, पद्मा जादौन, साधना पांवलाल, शुभा सिंह एवं ज्योति सोनी सहित अनेक महिलाएँ उपस्थित रहीं।

बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन

शाजापुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ शाजापुर पर महिलाओं की गरिमा, शक्ति और योगदान को समर्पित बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं आनंदवर्धक कार्यक्रमों के साथ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। मंचासीन गणमान्य बहिनों श्रीमती चंदा शर्मा, श्रीमती मनोरमा सोनी, श्रीमती इंदु पाटीदार, श्रीमती रश्मि सक्सेना, श्रीमती सविता सोनी (प्राचार्य) एवं प्रो. मीनू गिडवानी ने नारी की गरिमा, उसकी सामाजिक भूमिका तथा गर्भ संस्कार द्वारा संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण में नारी की भूमिका

गायत्री शक्तिपीठ शाजापुर में आयोजित समारोह में बहिनों का सम्मान

पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। गायत्री परिवार की बहिनों द्वारा वेद मंत्रों के उच्चारण, यज्ञ संचालन एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में निभाई जा रही भूमिका की प्रेरक झलकियाँ उपस्थित बहिनों को नई ऊर्जा से भर गईं। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सीमा शर्मा और श्रीमती भावना चौधरी द्वारा किया गया।

मानवता का भविष्य उज्ज्वल बनाने वाली शक्ति है नारी

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ अलीराजपुर में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती पुष्पलता शाह, विशेष अतिथि रेखा पंवार एवं कल्पना भाटिया उपस्थित रहीं। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए कल्पना भाटिया, गीता राठौर, गायत्री जगदीश राठौर, मीरा रणछोड़ राठौर एवं ममता दिनेश राठौर का सम्मान अतिथियों द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि श्रीमती पुष्पलता शाह ने कहा कि नारी भोग्या नहीं, सृजेता, पालक है। रेखा पंवार ने कहा कि नारी वही है, जिसके व्यक्तित्व में ममता, करुणा और प्रेम झलकता है। 21वीं सदी में मानवता का भविष्य उज्ज्वल बनाने वाली शक्ति है नारी।

श्रीमती निर्मला राठौर एवं दीप्ति राठौर ने वंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा जी के जीवनवृत्त पर प्रकाश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अलीराजपुर में युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित कार्यकर्ता बहिनों का सम्मान

डालते हुए शताब्दी वर्ष (2026) की जानकारी दी और शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा निकाली जा रही ज्योति कलश यात्रा का महत्त्व बताया। शक्तिपीठ की बहिनों एवं परिजनों ने आयोजन को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री गौरीशंकर भावसार, राजगढ़। मध्य प्रदेश

गायत्री प्रज्ञापीठ के निर्माता, व्यवस्थापक एवं मुख्य प्रबंधक श्री गौरीशंकर भावसार जी का 83 वर्ष की आयु में दिनांक 25 जनवरी 2025 को देहावसान हो गया। स्व. श्री भावसार जी का भूमि आबंटन से लेकर माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा तक हर कार्य में अग्रणी योगदान रहा। उन्होंने स्वयं ईंट-पत्थर चुन-चुन कर ऐसी शानदार प्रज्ञापीठ का निर्माण कराया है, जिसके दर्शन के लिए दूर-दूर के ग्रामवासी आते हैं।

स्व. श्री गौरीशंकर भावसार जी ने 25 गाँवों का एक मण्डल बना रखा था, जिनमें प्रत्येक माह दीपयज्ञ एवं प्रति रविवार पाँच कुण्डीय यज्ञ कराया करते थे। हँसमुख, मधुरभाषी श्री भावसार जी स्वयं साईकिल से अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना आदि पत्रिकाएँ बाँटा करते थे।

डॉ. सुमित पटैय्या, बैतूल। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार बैतूल के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रोशनलाल पटैय्या के सुपुत्र डॉ. सुमित पटैय्या (एमबीबीएस, एमडी मेडिसिन) का 6 फरवरी 2025 को निधन हो गया। परम वंदनीया माताजी के विशेष आशीर्वाद से शासकीय मेडिकल ऑफिसर के रूप में उन्होंने पीड़ित मानवता की जितनी सेवा की, वह चिरस्मरण रहेगी। मात्र 35 वर्ष की आयु में कोरोना महामारी के समय डॉ. सुमित पटैय्या ने स्वयं की परवाह न करते हुए मरीजों की भरपूर सेवा की थी, वे अनेकों मरीजों को नवजीवन देने में सफल रहे थे।

डॉ. सुमित पटैय्या के असमय निधन से पूरे जिले में शोक की लहर छा गई। श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने भी भाई आशीष सहित उनके परिवारी जनों को सांत्वना दी। कई धार्मिक, सामाजिक एवं शासकीय संगठनों ने श्रद्धांजलि सभा एवं चिकित्सा शिविर आयोजित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

जिला स्तरीय कर्मकांड प्रशिक्षण की शानदार उपलब्धि

ब्यावरा। मध्य प्रदेश

50 प्रशिक्षित पुरोहित करेंगे राष्ट्र जागरण

ब्यावरा में 21 से 23 फरवरी 2025 तक की तिथियों में आवासीय कर्मकांड प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें ब्यावरा जिले की सभी तहसीलों से आए सक्रिय कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर 50 प्रशिक्षित युग पुरोहितों ने समयदान कर घर-घर यज्ञ एवं संस्कार कराने का संकल्प लिया।

प्रशिक्षण का नेतृत्व मध्य प्रदेश शिक्षण एवं प्रशिक्षण

समन्वयक श्री रमेशचंद्र अभिलाषी, विक्रम सिंह पाटीदार और युग गायक सौरभ गुप्ता द्वारा किया गया। जिला समन्वयक डॉ. ओ.पी. पंवार सहित कई वरिष्ठ परिजनों ने शिविर संचालन में प्रशंसनीय योगदान दिया।

गायत्री शक्तिपीठ में फूल और गुलाल से मनाया फाग उत्सव

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट में फूल और गुलाल से फाग उत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इसमें 200 से अधिक बहिनों ने भाग लिया। सभी ने पारंपरिक भजनों के साथ आनन्दमय पर्व मनाया। गीतों में उल्लास था, तो सामाजिक समरसता बढ़ाने का दिव्य संदेश भी था। सबने मिलकर फूलों और गुलाल से होली खेली।

उत्सव की शुरूआत पूर्व धार से आई अतिथि प्रज्ञा बैरागी, कृष्णा यादव, कल्पना यादव और अनिता साजन द्वारा पूजन के साथ हुई। केसर राठौड़, पुष्पा राठौड़, सरोज राठौड़, प्रेमलता चौहान, सारिका सक्सेना, वंदना वाणी, रविकान्ता वर्मा आदि ने गायत्री मंत्र दुपट्टा, तिलक एवं माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया।

कार्यक्रम में घर-घर संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन तथा भावी पीढ़ी के नवनिर्माण का विशेष संदेश दिया गया। समस्त बहिनों ने आयोजन को सफल और प्रेरणादायक बताते हुए इसे प्रतिवर्ष मनाने की इच्छा जताई। गीत, भजन और आध्यात्मिक चर्चाएँ भी हुईं।

आपकी बाह्य परिस्थिति कितनी ही सामान्य क्यों न हो, यदि आपका अंतःकरण असामान्य है तो निश्चित जानिये कि आप अपनी बाह्य स्थिति को भी असामान्य बना सकेंगे।

108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ की समीक्षा एवं सम्मान गोष्ठी संपन्न

मंडीदीप, रायसेन। मध्य प्रदेश

13 से 16 जनवरी की तिथियों में मण्डीदीप में एक अत्यंत सफल और प्रेरणादायी 108 कुंडीय विराट गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसकी सफलता के चर्चे पूरे मण्डीदीप क्षेत्र में थे। 1 मार्च 2025 को मध्य जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीश कुलमी एवं श्रीमती गायत्री कुलमी, मध्य प्रदेश जोनल समन्वयक श्री राजेश पटेल एवं उपजोन समन्वयक श्री हजारी जी की विशेष उपस्थिति में इस महायज्ञ की समीक्षा एवं सम्मान गोष्ठी का आयोजन कर इसकी सफलता के शिल्पियों को सम्मानित किया गया।

500 से अधिक कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्ति पत्र दिए गए

समीक्षा गोष्ठी को संबोधित करते हुए शान्तिकुञ्ज एवं प्रांतीय संगठन के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने कार्यकर्त्ताओं के समर्पण भाव को ही सच्चा यज्ञ बताया। उन्होंने कहा कि आपके श्रम और समय की आहुतियाँ ही समाज में अभीष्ट परिवर्तन लायेंगी। उन्होंने समस्त समर्पित कार्यकर्त्ताओं और विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिह्न एवं प्रोत्साहन पत्र देकर सम्मानित किया।

इस गोष्ठी में नगर के पूर्व अध्यक्ष श्री विपिन भार्गव, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के श्री नरेन्द्र मैथिल, पार्षद श्री प्रार्थना चौहान, समाजसेवी श्रीमती रचना सिंह सहित ओबेदुल्लागंज, भोपाल, प्रज्ञापीठ बरखेड़ा एवं विभिन्न चेतना केंद्रों से 500 से अधिक कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। सभी को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्ति पत्र भेंट करते जोन समन्वयक

सहयोगी अधिकारियों तक पहुँचकर किया सम्मान

प्रशासनिक अधिकारियों व गणमान्य नागरिकों का सम्मान

गायत्री महायज्ञ मण्डीदीप के आयोजन में प्रशासनिक अधिकारियों का भी श्रद्धा और भक्तिभाव भरा प्रशंसनीय योगदान रहा। कार्यकर्त्ता उन सभी तक पहुँचे, उन्हें स्मृति चिह्न, युग साहित्य और पाक्षिक प्रज्ञा अभियान भेंट कर सम्मानित किया। सम्मानित किए गए अधिकारियों में प्रमुख हैं–एसडीएम श्री चंद्रशेखर जी, एसडीओपी श्रीमती शीला सुराना जी, नगरपालिका अध्यक्ष श्री प्रियंका राजेंद्र अग्रवाल जी, पार्षद श्री शेरसिंह जी, श्री विजय त्रिपाठी जी, टीआई श्री अजय जी, श्री अशोक तिवारी जी आदि।

प्राणवान महायज्ञ, क्रान्तिकारी अनुयाज

1200 लोगों तक पहुँचाया प्रज्ञा अभियान

गायत्री चेतना केंद्र, मण्डीदीप ने 108 कुण्डीय महायज्ञ के अनुयाज के अंतर्गत परम पूज्य गुरुदेव के संदेश को 122 गाँवों तथा भोपाल एवं रायसेन जिले की सभी तहसीलों तक पहुँचाने का संकल्प लिया है। इसके अंतर्गत गाँव-गाँव दीवार लेखन एवं गायत्री मंत्रलेखन अभियान चलाने के साथ सप्त आन्दोलनों के क्रियान्वयन की योजना बनाई गई है।

यज्ञ के समय पूरे क्षेत्र में यज्ञ की ऊर्जा को निरंतर जीवंत रखने और युगऋषि के संदेश को सतत प्राणवान बनाये रखने के लिए 1008 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प लिया गया था। प्रसन्नता की बात है कि क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं के उत्साह के अनुरूप प्रज्ञा अभियान के मध्य प्रदेश संस्करण की 1200 प्रतियाँ मँगाई गईं व यज्ञ के प्रभावक्षेत्र के सभी गाँव-नगरों में पहुँचाई गईं। कार्यकर्त्ताओं का प्रयास है कि न्यूनतम ये 1200 लोगों को प्रज्ञा अभियान के नियमित पाठक बना लिये जायें।

मण्डीदीप के कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ता सर्वश्री धीरज मणि जी, जिला समन्वयक सुश्री बबली धाकड़, उपजोन समन्वयक श्री रघुनाथ प्रसाद हजारी जी का मानना है कि ज्योति कलश यात्राओं की सफलता तथा जन्मशताब्दी वर्ष को लेकर चलाये जा रहे जनजागरण अभियान को सफल बनाने में प्रज्ञा अभियान की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

इंडस्ट्रियल एक्सपो 2025 : इंजीनियरिंग और अध्यात्म का अनूठा संगम

व्यापारियों को युग साहित्य के प्रति आकर्षित किया

मण्डीदीप, रायसेन। मध्य प्रदेश

औद्योगिक शहर मण्डीदीप के दशहरा मैदान में 7 से 10 मार्च तक इंडस्ट्रियल एक्सपो 2025 का आयोजन हुआ। लोग मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, केबल, वायर, कंप्यूटर तकनीक और सेफ्टी प्रोडक्ट्स जैसे आधुनिक उत्पादों को देखने पहुँचे तो वहीं मेले में गायत्री परिवार द्वारा लगाए गए **विचार क्रांति साहित्य** पटल ने भी दर्शकों को आकर्षित किया। पूज्य गुरुदेव के साहित्य ने मेले में एक अलग ही आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया।

यह साहित्य पटल न केवल उच्च शिक्षित वर्ग को आकर्षित करता रहा, बल्कि यह व्यवसायियों के बीच भी बहुत लोकप्रिय रहा। सभी ने अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें खरीदीं।

पुस्तक मेला एवं आध्यात्मिक शिविर

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार ट्रस्ट, जबलपुर द्वारा 25 फरवरी से 3 मार्च तक विराट पुस्तक मेला एवं आध्यात्मिक सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। गायत्री शक्तिपीठ, श्रीनाथ की तलैया से वेदधारी महिलाओं, समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सैकड़ों गायत्री परिजनों की शोभायात्रा के साथ मेले का शुभारंभ हुआ। गाजे-बाजे व प्रज्ञागीतों के साथ निकली यह यात्रा अद्‌भुत और बड़ी आकर्षण थी।

विद्वानों ने सराहा

मेले का उद्‌घाटन तपोभूमि मथुरा से पधारे श्री राम मुरारी गुप्ता, गौ सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष स्वामी अखिलेशानंद एवं पूर्व न्यायाधीश श्री आई.एस. श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। महामंडलेश्वर श्री नरसिंहदास जी, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री अचल पालीवाल, कुलपति डॉ. राजेश वर्मा, त्रिपुरी टाइम्स के संपादक श्री राजेश जायसवाल, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. पवन स्थापक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर संचालक श्री आनंद जी, विधायक श्री अशोक रोहाणी एवं अभिलाश पांडे सहित अनेक विशिष्टजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी ने आचार्यश्री के साहित्य को अध्यात्म व विज्ञान का अद्‌भुत समन्वय बताया।

सहयोग और संकल्प

विधायक श्री अशोक रोहाणी जी द्वारा छात्रों हेतु पुस्तकों के लिए 10,000 रुपये की सहायता प्रदान की गई। जबलपुर विजन संस्था ने अपने सदस्यों को अखण्ड ज्योति का नियमित पाठक बनाने का संकल्प लिया।

अंतिम दिन विराट गायत्री दीप महायज्ञ के साथ मेला संपन्न हुआ। हजारों श्रद्धालुओं ने **ब्रह्म भोज** योजना के अंतर्गत गुरुदेव के साहित्य को घर-घर स्थापित किया, जिससे लाखों रुपये का साहित्य वितरण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

ज्ञानवर्धक एवं लोकरंजक सम्मेलन

सप्ताहभर चले इस मेले में प्रतिदिन चिकित्सा व कानूनी सलाह उपलब्ध कराई गई। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के अंतर्गत डॉ. अमिता सक्सेना व उनकी टीम ने नवदम्पति दायित्व बोध शिविर आयोजित किया, जिसमें कानपुर से पधारी डॉ. संगीता सारस्वत ने वैवाहिक जीवन के मूलमंत्र साझा किए।

वॉइस ऑफ प्रज्ञा मंच से भजन, लोक नृत्य और प्रज्ञा गीतों की प्रस्तुतियों ने श्रद्धालुओं को भावविभोर किया।

नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

विश्वशांति के लिए विशेष आहुतियाँ दीं, 10 गर्भ संस्कार सम्पन्न हुए

ग्वालियर। मध्य प्रदेश : माधवनगर, ग्वालियर स्थित सिद्धेश्वर मंदिर के सामुदायिक भवन में चार दिवसीय नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं संस्कार महोत्सव का 2 मार्च को समापन हुआ। इस यज्ञ में आत्मसंयम और साधना के माध्यम से स्वास्थ्य, नशा उन्मूलन और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणाएँ प्रमुखता से दी गईं। सामाजिक सद्‌भाव और विश्वशान्ति की कामना के साथ महामृत्युंजय मंत्र एवं अन्य विशेष मंत्रों से आहुतियाँ भी दी गईं।

यह कार्यक्रम सर्वश्री लक्ष्मण सिंह, रणवीर सिंह, रूपनारायण दुबे, संतोष सिंह, प्रमोद कुमार की टोली ने सम्पन्न कराया। 10 गर्भोत्सव संस्कार हुए। इस अवसर पर डॉ. बीना अग्रवाल ने संस्कार कराने वाली बहिनों को गर्भ में ही संस्कार देने की विधि समझाई।

यज्ञ की शुरूआत भव्य कलश यात्रा से हुई, जिसमें 51 कलश धारण कर 200 महिलाओं ने नारी सशक्तीकरण, संस्कार, नशा मुक्ति और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। यह शोभायात्रा प्राचीन गणेश मंदिर, हरिशंकरपुरम, मुक्तानंद आश्रम और श्रीराम कॉलोनी से होते हुए यज्ञ स्थल पर पहुँची। कार्यक्रम में ग्वालियर की महापौर शोभा सिकरवार, पार्षद अपर्णा पाटील, एमएलबी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. हरीश अग्रवाल, गायत्री परिवार की उपजोन प्रभारी पं. डी.पी. लावनिया, डॉ. ज्योति गुप्ता और संजय गुप्ता विशेष रूप से उपस्थित रहे।

लोकमंगल के लिए विशिष्ट साधना, प्रार्थना व संकल्प

24 गाँव, 24 घर, 24 रविवार

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान की शानदार शुरूआत

ग्वालियर। मध्य प्रदेश

विगत वसंत पंचमी से गायत्री परिवार की मालखरौदा शाखा के तत्त्वावधान में न्यूनतम 24 गाँव, 24 घर, 24 रविवार का लक्ष्य लेकर गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान आरंभ किया गया है। यह यज्ञ योजना सक्ती, डबरा और जैजैपुर ब्लॉक के परिजनों के सहयोग से आरंभ की गई है। दैव योग से नैष्ठिक संकल्पों को शानदार सफलता मिल रही है। बसंत पंचमी पर ग्राम छपोरा से अभियान का शुभारंभ हुआ। छपोरा के 28 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराए गए। समाचार लिखे जाने तक क्रमशः अगले रविवार को पिहरिद के 46 घरों में और 2 मार्च को सकर्रा में 25 घरों में यज्ञ आयोजन कराने में सफलता मिली। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री भूपेंद्र साहू के आवास पर भी यज्ञ सम्पन्न हुआ।

आयोजकों ने बताया कि ब्लॉक में पहले ही 108 कुंडीय, 24 कुंडीय, नौ कुंडीय और पाँच कुंडीय सामूहिक यज्ञों के कार्यक्रम सम्पन्न कराए जा चुके हैं, लेकिन गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के माध्यम से घर-घर संस्कार, नशामुक्ति और पर्यावरण संरक्षण का जो संदेश दिया जा रहा है, वह और भी अधिक प्रभावशाली है। इस अभियान से पुरोहित और यजमानों को परस्पर संवाद का बेहतर अवसर मिलता है, जिससे लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान भी होता है। यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री लोगों को निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है।

इस अभियान को सफल बनाने में ब्लॉक संयोजक कृष्ण कुमार जी के नेतृत्व में अनेक शाखाओं के कार्यकर्त्ताओं का सक्रिय सहयोग रहा है। इसके माध्यम से गायत्री परिवार संस्कार, नशामुक्ति और पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुँचा रहा है।

जीवन तो वही है जो अनेकों को प्रकाश दे। प्रकाश उसी का नाम है, जिसकी चमक से अनेकों में आशा भर उठे।

जीवन के सौभाग्य का वरण करने की प्रेरणा देते विराट 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने बिहार और झारखण्ड में सम्पन्न कार्यक्रमों में पहुँचकर दिया हृदयस्पर्शी संदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युग नायक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 5 से 9 मार्च 2025 तक की तिथियों में बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल के पाँच दिवसीय प्रवास पर पहुँचे थे। इन पाँच दिनों में वे बेतिया, सिवान, बक्सर, गया और बाँका में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञों में शामिल हुए। अपनी विनम्रता, आत्मीयता, उदात्त व्यक्तित्व एवं प्रेरक वचनों से उन्होंने लाखों श्रद्धालुओं को प्रभावित किया। इस प्रवास से तीनों राज्यों के हजारों कार्यकर्त्ताओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ, जो जन्मशताब्दी वर्ष के विशिष्ट कार्यक्रमों की सफलता में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

बेतिया के यज्ञ में भागीदारी कर रहे श्रद्धालुओं को संबोधित करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

अपने जीवन-दीप से समाज को प्रकाशित करें

बेतिया। बिहार : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के पाँच दिवसीय कार्यक्रमों की शृंखला का शुभारंभ नन्होसती, बेतिया में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में भागीदारी के साथ हुआ। दीपयज्ञ का अवसर था। केसरिया वस्त्रों में हजारों श्रद्धालु आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को अपने बीच पाकर गद्गद थे। यज्ञशाला का सम्पूर्ण वातावरण प्रज्वलित दीपों की दिव्य ज्योति के प्रभाव से आध्यात्मिक ऊर्जा और सकारात्मकता से भरा हुआ था। हर हृदय से गायत्री महामंत्र और महामृत्युंजय मंत्राहुतियों के साथ राष्ट्र कल्याण, विश्व शांति एवं समाज की उन्नति के लिए प्रार्थनाएँ हो रही थीं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस दिव्य वातावरण में श्रोताओं को अपने भीतर विद्यमान देवत्व को पहचानने तथा गायत्री उपासना से जीवन को सार्थक बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन एक दुर्लभ सौभाग्य है। गायत्री उपासना, साधना अंतर्निहित देवशक्तियों को जगाकर जीवन को सफल और सार्थक बनाती है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने यज्ञ और दीपयज्ञ का महत्त्व समझाते हुए इन्हें मात्र कर्मकाण्ड नहीं, जीवन शैली के रूप में स्वीकारने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अपने दीपक आप स्वयं बनें, ताकि आपके जीवन का प्रकाश समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सके।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि से मिले श्री प्रशांत किशोर

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी श्री प्रशांत किशोर जी को युग साहित्य भेंट करते हुए

बेतिया। बिहार
सुप्रसिद्ध राजनेता, जनसुराज पार्टी के सूत्रधार श्री प्रशांत किशोर जी बेतिया में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से मिलने आए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उनका भावभरा स्वागत किया और उनके अन्त्योदय के विचार तथा प्रयासों की सराहना की।

परस्पर चर्चा में समाज के उत्थान और राष्ट्र के नवनिर्माण संबंधी विचारों का विस्तृत आदान-प्रदान हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना और शान्तिकुञ्ज की गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि विश्व में दीर्घकालिक परिवर्तन मात्र पूज्य गुरुदेव और वंदनीया माताजी के प्रदत्त विचारों का अनुपालन करने से संभव है। चर्चा के अंत में उन्होंने श्री प्रशांत किशोर जी को पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया।

यज्ञ हमें देवता बनाता है

सिवान। बिहार
मानवता का भविष्य तभी उज्ज्वल हो सकता है, जब प्रत्येक मनुष्य के भीतर देवत्व का उदय हो। मानव में देवत्व जगेगा, तभी धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव होगा।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 6 मार्च को सिवान में चल रहे 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में देवपूजन के अवसर पर यह प्रेरणाएँ दीं, कहा कि देवपूजन के मंत्रों के साथ हमारे भीतर का भाव यही हो कि हे प्रभु! जीवन हमारा यज्ञमय कर दीजिए, हमारे भीतर के देवत्व को विकसित कर दीजिए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने पूज्य गुरुदेव के विचारों का स्मरण कराते हुए जीवन में देवत्व के विकास के लिए तीन गुणों का महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि जब मनुष्य के भीतर देने का भाव, सेवा का भाव और त्याग का भाव विकसित होता है, तब वह देवता बन जाता है। जिस व्यक्ति का दिल बड़ा होता है, वही सच्चे देवता का स्वरूप है। उन्होंने कहा कि देवपूजन का पावन क्रम हमें हमारे भीतर की दिव्यता से जोड़ता है।

सिवान में यज्ञ मंच पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को सम्मानित करते प्रमुख कार्यकर्त्तागण

देवपूजन के इस पावन अवसर पर पूरे सिवान में एक दिव्य ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार हुआ, जिससे समाज में प्रेम, शांति और सद्भाव का संदेश पहुँचा।

समाज में शान्ति और सौहार्द्र का संदेश फैलायें

बक्सर। बिहार
भगवान श्रीराम की शिक्षा-भूमि बक्सर में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दीप महायज्ञ की वेला में पहुँचे और महायज्ञ के माध्यम से समाज में आध्यात्मिक और नैतिक जागृति का संदेश दिया।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अग्रदूत आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि दीपयज्ञ में हर दीपक का जलना हमारे भीतर छिपे अंधकार को दूर करने का प्रतीक है। हमें यह संकल्प लेना होगा कि हम न केवल अपने जीवन में दिव्यता को स्थापित करें, बल्कि समाज में भी शांति और सौहार्द का प्रकाश फैलाएँ। मानवीय जीवन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हमारा जीवन एक दीप है, जिसका उद्देश्य अज्ञानता के अंधकार से लड़ना और समाज को ज्ञान, सेवा और परोपकार के मार्ग पर अग्रसर करना है।

दीप महायज्ञ के अवसर पर प्रज्वलित असंख्य दीपक समाज के हर कोने में अच्छाई, सद्भाव और नैतिकता का प्रकाश फैलाने के प्रतीक बने। साधकों को अपने भीतर छिपे अंधकार को दूर कर ज्ञान और धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प दिलाया गया।

गायत्री शक्तिपीठ में विदाई के भावुक पल

7 मार्च को गायत्री शक्तिपीठ बक्सर में बड़ी संख्या में परिजन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को विदाई देने पहुँचे थे। परिजनों की आँखें नम थीं, हृदय भावनाओं से भरे हुए थे। सभी की भावनाओं का सम्मान करते हुए आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने परिजनों से कहा, ''गायत्री परिवार केवल एक संगठन नहीं, यह एक विशाल देव परिवार है, जहाँ हर सदस्य का कर्त्तव्य है कि वह युग निर्माण के इस महान कार्य में अपनी भूमिका निभाए।

यज्ञीय जीवनशैली को आत्मसात करना ही समाज की उन्नति का पथ है और यही मार्ग व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ विश्वकल्याण का भी है। अपने जीवन में सादगी, समर्पण और सेवा को स्थान दें और माँ गायत्री की कृपा से अपने भीतर की श्रेष्ठ शक्तियों को जागृत करते हुए समाज के लिए प्रेरक बनें।

ऊपर बक्सर के दीपयज्ञ में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते डॉ. चिन्मय जी तथा नीचे शक्तिपीठ में कार्यकर्त्ताओं के बीच भावविभोर कर देने वाले पल

मध्य रात्रि में भी श्रद्धा से सराबोर थे दीपयज्ञ के होतागण

बाँका। बिहार
सविताकुञ्ज, बाँका में विराट 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ चल रहा था। गया से 8 घंटे की लंबी यात्रा करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी रात्रि 10 बजे यज्ञस्थल में पहुँचे। दीप महायज्ञ का अवसर था। इतने विलम्ब के बावजूद उनका प्यार और मार्गदर्शन पाने के लिए हजारों श्रद्धालु, साधक, कर्मठ कार्यकर्त्ता प्रतीक्षा कर रहे थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा, ''परम पूज्य गुरुदेव ने हर मनुष्य को चलता-फिरता मंदिर बनने की प्रेरणा दी है। दीपयज्ञ का यही संदेश है कि अपने भीतर का दीप जलाओ और अपने जीवन के माध्यम से जग को जगमगाओ। देवता हमारे हृदय में निवास करते हैं, हमें अपने हृदय को खोलकर इस दिव्यता का अनुभव करना होगा।

इस महायज्ञ के माध्यम से बाँका की धरती पर एक बार फिर से आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ, जिससे न केवल व्यक्तिगत, बल्कि सामाजिक उत्थान की दिशा में भी एक नया मार्ग प्रशस्त हुआ।

गोपालगंज, सिवान, बक्सर एवं बलिया में शक्तिपीठों के दर्शन

पाँच दिवसीय प्रवास के दूसरे दिन, 6 मार्च को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी गोपालगंज, सिवान, बक्सर एवं बलिया पहुँचे। उन्होंने प्रत्येक स्थान पर गायत्री शक्तिपीठों में दर्शन-पूजन कर वहाँ कार्यकर्त्ताओं को संबोधित किया। उन्हें जन्मशताब्दी वर्ष से जुड़ी उनकी विशिष्ट जिम्मेदारियों का बोध कराया। देसंविवि के प्रति कुलपति जी ने बक्सर के अनंतविजयम एकेडमी में भेंट कर सभी को सृजनात्मक एवं सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल में सम्पन्न यज्ञायोजन एवं कुछ विशिष्ट कार्यक्रम

मोक्षदायी पावन तीर्थ में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्वर्ग, मुक्ति पाने के लिए श्रेष्ठ विचारों से जुड़ें। - *आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी*

गया। बिहार : भगवान बुद्ध की तपःस्थली और मोक्षदायी तीर्थ गया में 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने अपने हृदयस्पर्शी उद्‌बोधन में कहा कि यज्ञ केवल आत्मिक शुद्धि का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का सशक्त साधन है। आज समाज में सद्‌भाव, सेवा और परोपकार की भावना को बढ़ाने की आवश्यकता है। यज्ञ इन भावनाओं के पोषण का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

गया की पवित्र भूमि में गायत्री महायज्ञ को एक उत्तम संयोग बताते हुए उन्होंने कहा कि स्वर्ग, मुक्ति, मोक्ष जैसी धारणाएँ मात्र कर्मकाण्ड से संभव नहीं, यह तो विचार और भावनाओं से ही संभव है। इस पवित्र नगरी

गायत्री शक्तिपीठ में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत

में आयोजित हो रहा यह गायत्री महायज्ञ श्रद्धालुओं को परम पूज्य गुरुदेव के ऐसे ही मोक्षदायी विचारों के साथ जुड़ने का सौभाग्य लेकर आया है।

मंत्री जी ने मुलाकात की

बिहार राज्य के सहकारिता मंत्री श्री प्रेम कुमार जी ने सपत्नीक यज्ञ में पहुँचकर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट की। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गया में सम्पन्न गायत्री महायज्ञ में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए

'विश्वगुरु शोध सम्मान' से सम्मानित हुए डॉ. पण्ड्या जी

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को सम्मानित करते चैंबर्स ऑफ कॉमर्स, गया के प्रतिनिधि

गया में यज्ञ के देव पूजन के शुभ अवसर पर चैंबर्स ऑफ कॉमर्स, गया द्वारा आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को 'विश्वगुरु शोध सम्मान' से सम्मानित किया गया। डॉ. चिन्मय जी ने इसे अपनी गुरुसत्ता को समर्पित करते हुए इसे गायत्री परिवार के प्रत्येक कार्यकर्त्ता का सम्मान बताया।

उत्तर प्रदेश के माननीय परिवहन मंत्री से मिले डॉ. पण्ड्या जी

जन्मभूमि आँवलखेड़ा से कर्मभूमि शान्तिकुञ्ज तक की यात्रा को सुगम बनाने पर चर्चा हुई

बक्सर (बिहार) में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के समय आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की भेंट उत्तर प्रदेश के माननीय परिवहन मंत्री श्री दया शंकर सिंह जी से हुई। डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव का जीवन पूरी विश्वमानवता के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने पूज्य गुरुदेव की जन्मभूमि आँवलखेड़ा से कर्मभूमि शान्तिकुञ्ज की यात्रा को उनकी आत्मिक उन्नति और समाज सेवा के प्रति अविरल समर्पण भावना का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि

माननीय मंत्री जी को सम्मानित करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

इस यात्रा से जुड़ने वाले हर साधक-श्रद्धालु का जीवन उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हुआ है।

माननीय परिवहन मंत्री जी के साथ हुई वार्ता में युगऋषि की जन्मभूमि आँवलखेड़ा से कर्मभूमि शान्तिकुञ्ज के बीच सीधी बस सेवा आरंभ करने पर विचार-विमर्श हुआ। श्री दया शंकर सिंह जी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और इसे जल्द से जल्द मूर्त रूप देने का आश्वासन दिया।

चर्चा में माननीय मंत्री जी ने समाज के नवनिर्माण में परम पूज्य गुरुदेव के योगदान की सराहना की। उन्होंने समाज कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति के लिए मिलकर कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई।

मंदार पर्वत पर ध्यान, मिले गुरुसत्ता के ऊर्जा अनुदान

समुद्र मंथन के लिए मथनी बना था मंदार पर्वत, प.पूज्य गुरुदेव एवं लाहिड़ी महाशय ने की थी साधना

बाँका। बिहार

बाँका में मंदार पर्वत (मंदराचल) वह ऐतिहासिक पर्वत है, जिसे मथनी बनाकर और वासुकी नाग को रस्सी बना कर देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया था। इस समुद्र मंथन से चौदह रत्न निकले थे। यह वह पुण्य धरा है, जहाँ महायोगी लाहिड़ी महाशय ने तप कर सिद्धियाँ पायी थीं। पौराणिक महत्त्व का यह पर्वत गायत्री परिवार के लिए विशेष आस्था का केन्द्र इसलिए भी है, क्योंकि सन् 1953 में परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने भी इस स्थान पर तप कर युगनिर्माण के लिए आवश्यक ऊर्जा का संचय किया था। भारतीय संस्कृति की इसी महान अभिव्यंजना को पूज्य गुरुदेव ने गायत्री परिवार की स्थापना का आधार बनाया और अखंड ज्योति के प्रकाशन के साथ ही लिखा, *''सुधा बीज बोने से पहले कालकूट पीना होगा, पहन मौत का मुकुट विश्वहित मानव को जीना होगा।''*

बाँका के 108 कुण्डीय यज्ञ में पहुँची आदरणीय डॉ. चिन्मय पड्या जी की टोली 8 मार्च को इसी पौराणिक महत्त्व के मंदार पर्वत के दर्शन के लिए पहुँची। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उस गुफा में ध्यान किया, जहाँ पूज्य गुरुदेव ने 1953 में आकर ध्यान किया था। दर्शन-ध्यान के समय परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के ऊर्जानुदानों की अनुभूतियाँ अंतःकरण को भावविभोर करती रहीं।

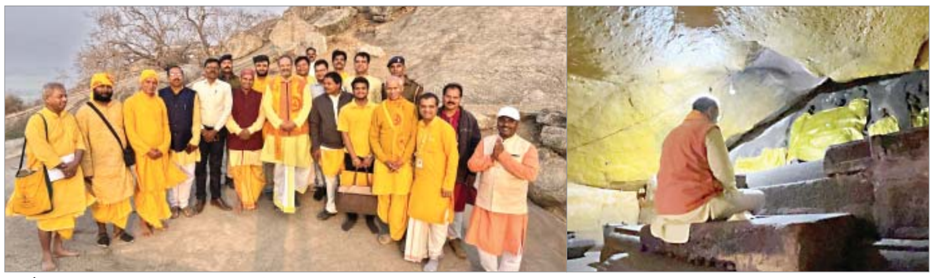

पौराणिक महत्त्व के आध्यात्मिक केन्द्र मंदार पर्वत पर पहुँचा शान्तिकुञ्ज दल एवं मंदार गुफा में ध्यान करते डॉ. चिन्मय जी

गायत्री सेवा आश्रम, रानीगंज का उद्घाटन

रानीगंज। पश्चिम बंगाल

कोयला खदानों और औद्योगिक विकास के लिए प्रसिद्ध रानीगंज में दिनांक 8 मार्च 2025 को अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के करकमलों से गायत्री सेवा आश्रम का उद्‌घाटन हुआ। इस अवसर पर उन्होंने केन्द्र के महान उद्‌देश्यों-समाज में शिक्षा और नैतिकता के विस्तार तथा पीड़ा-पतन निवारण की सराहना की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि भगवान का पूजन कर्मकांड मात्र से ही नहीं, बल्कि उनकी प्रेरणा और सिद्धांतों को जीवन में उतारने से सफल होता है। कभी-कभी ऐसे क्षण आते हैं, जब भगवान आपको बुलाते हैं। हमारे जीवन में ऐसा सौभाग्य दबे पाँव आया है। ऋषिसत्ता ने हमें बुराइयों से लड़ने के लिए चुना है, आवश्यकता महाकाल की उस अहैतुकी कृपा को पहचानने और उसके लिए स्वयं को समर्पित कर जीवन धन्य बनाने की है।

गायत्री सेवा आश्रम के उद्‌घाटन समारोह में कोलकाता, आसनसोल, पुरूलिया, दुर्गापुर, बर्धमान, बराकर, कुल्टी, अंडाल, उखड़ा, धनबाद के कार्यकर्ता उपस्थित हुए। सभी परिजन आदरणीय भैया जी से भेंट कर बहुत भाव विभोर हो गए। सभी ने उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी।

भगवान की उपस्थिति का सतत अनुभव करें

चाकुलिया, पूर्व सिंहभूम। झारखंड

7 से 9 मार्च 2025 की तिथियों में चाकुलिया में प्राण प्रतिष्ठा एवं 24 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीपयज्ञ के समय उपस्थित होकर हजारों श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन किया।

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उपस्थित श्रद्धालुओं की आस्था को हृदय के गहन अंतराल तक ले जाते हुए कहा कि हमारी यज्ञाहुतियाँ तब अत्यंत प्रभावशाली हो जाती हैं, जब भगवान के प्रति भरोसा हो, भावना में बल हो और प्रार्थना केवल एक ही हो—हमें उन्हें देख पाने की सामर्थ्य प्राप्त हो। उन्होंने स्पष्ट किया कि हम भगवान को न केवल पूजें, बल्कि अपने जीवन के हर पहलू में उनकी उपस्थिति को अनुभव करें।

परम पूज्य गुरुदेव की सर्वव्यापकता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि गुरुदेव को हर व्यक्ति का पता है और वह हमें सही दिशा में मार्गदर्शित करते हैं। चलता वही है, जिस पर भगवान का हाथ होता है।

परमात्मचेतना में विलीन हो गईं श्रीमती शान्ति शर्मा

शान्तिकुञ्ज की जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्रीमती शान्ति शर्मा, धर्मपत्नी श्री उमेश चंद्र शर्मा का दिनांक 2 मार्च 2025 को देहावसान हो गया। वे 80 वर्ष की थीं। विगत 30 वर्षों से शान्तिकुञ्ज के परिवहन विभाग में सेवाएँ प्रदान कर रहे श्री उमेश चंद्र शर्मा जी का पूरा परिवार मिशन के प्रति अनन्य भाव से समर्पित है। बेटा चि. नागमणि शर्मा भी सपरिवार शान्तिकुञ्ज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता है, जबकि दो बेटे दिल्ली में व्यापार करते हुए मिशन की सेवा कर रहे हैं। बेटी श्रीमती पुष्पा शर्मा गुरुग्राम में संगीत शिक्षिका के रूप में युवा पीढ़ी को मिशन के विचार और संस्कार दे रही है।

मनीऑर्डर या पत्राचार में सही पता व पिनकोड लिखें

प्रज्ञा अभियान तथा मराठी, ओडिया, तमिल, मलयालम आदि विभिन्न भाषाओं में शान्तिकुञ्ज से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं की सदस्यता ग्रहण करने या सदस्यता नवीनीकरण के लिए अनेक परिजन मनीऑर्डर से अपनी धनराशि भेजते हैं। देखा गया है कि बहुत सारे मनीऑर्डर में गलत नाम और पिनकोड लिखा होने के कारण यह हमें अत्यंत विलम्ब से प्राप्त होता है। अतः सभी से अनुरोध है कि शान्तिकुञ्ज को भेजे जाने वाले मनीऑर्डर या पत्राचार में सही पता लिखें। पता है- **श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। उत्तराखण्ड पिनकोड-249411**

मुझे न भक्ति की परवाह है, न कि मुक्ति की। मैं ऐसा वासंती जीवन जीना चाहता हूँ, जिससे हर ओर प्रसन्नता और खुशहाली का वातावरण बने। -स्वामी विवेकानन्द

देव संस्कृति विवि. आए कई देशों के प्रतिनिधि मण्डल

बायें रूस से और दायें वियतनाम से आया प्रतिनिधि मण्डल

रूस : 4 मार्च को येकातेरिना जार्जिवना के नेतृत्व में रूस से 16 युवाओं का एक प्रतिनिधि मण्डल देसंविवि आया। सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना के वैश्विक संवाहक माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने साधना, जीवनोत्कर्ष आदि विषयों पर उनका मार्गदर्शन किया। उन्होंने मूल्य आधारित शिक्षा और समग्र व्यक्तित्व विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके मार्गदर्शन ने अतिथियों में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था बढ़ायी।

वियतनाम : वियतनाम से डॉ. शिवम मिश्रा के नेतृत्व में एसकेएस योग से जुड़े आठ सदस्यों का दल देसंविवि आया। माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उनके साथ योग की परिवर्तनकारी शक्ति और शिक्षा के प्रति विश्वविद्यालय के समग्र दृष्टिकोण की चर्चा की। दल के सदस्यों ने विवि. के विभिन्न विभागों का भ्रमण किया। उन्होंने देसंविवि की शिक्षण पद्धति और मूल्य आधारित शिक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की और यहाँ के शैक्षिक और सांस्कृतिक वातावरण को मुक्त कंठ से सराहा।

यूरोपीय देशों का प्रतिनिधि मंडल

12 मार्च को अध्यात्मवेत्ता प्रेम बाबा के नेतृत्व में एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज आया। इसमें ब्राजील, अर्जेंटीना, आयरलैंड, इटली और स्पेन से 70 सदस्य शामिल थे। यह प्रतिनिधि मण्डल विविध देशों के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्पराओं के आदान-प्रदान से विश्व समुदाय में मानवीय उत्कर्ष और सद्भाव को बढ़ावा देने के महान प्रयोजन के साथ यहाँ आया था। प्रतिनिधि मंडल ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्थित गौशाला, स्वावलंबन कार्यशाला, स्मृति उपवन सहित विभिन्न प्रकल्पों का अध्ययन किया एवं प्रज्ञेश्वर महादेव देवालय में पूजा, प्रार्थना की।

प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंटवार्ता के समय युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य जी की कालातीत, सर्वमान्य, सर्वहितकारी शिक्षाओं को जानने, समझने का अवसर मिला। डॉ. पण्ड्या जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के विचार ही विश्व शान्ति और सद्भाव की स्थापना का आधार बनेंगे।

सभी अतिथिगण गायत्री परिवार के सकारात्मक मानवतावादी दृष्टिकोण से बहुत प्रभावित हुए। माननीय प्रति कुलपति जी ने दल के सभी सदस्यों को प्रतीक चिह्न, युग साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया।

जस्टआन्सर के सीईओ आए

जस्टआन्सर के संस्थापक और सीईओ श्री एंडी कुट्‌र्जिग 15 मार्च को शान्तिकुञ्ज आए। उन्होंने श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट कर भारतीय संस्कृति और अध्यात्म से जुड़ी अनेक जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। उन्होंने देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ प्रौद्योगिकी, शिक्षा और आध्यात्मिक विकास तथा समग्र शिक्षा के माध्यम से सामाजिक उत्थान जैसे विषयों पर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के तरीकों पर विचार विमर्श किया। श्री कुट्‌र्जिग ने प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विधाओं के साथ जोड़ने के विश्वविद्यालय के अभिनव दृष्टिकोण की सराहना की।

सैंड्रा स्जनिर सिखाएगी पोलिश भाषा

देसंविवि. आई पोलिश (पोलैंड की भाषा) की प्रतिष्ठित शिक्षिका सैंड्रा स्जनिर ने आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से चर्चा करते हुए देसंविवि के विद्यार्थियों को पोलिश भाषा और लिपि सिखाने का निश्चय किया है, ताकि यहाँ के विद्यार्थियों के साथ पोलैंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को साझा किया जा सके।

बेलारूस का प्रतिनिधिमंडल आया

बेलारूस की अक्साना पाखाबावा के नेतृत्व में उच्च प्रशिक्षित एवं भारतीय संस्कृति में विशेष रुचि रखने वाले सदस्यों का आठ सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल देव संस्कृति विवि. आया। दल ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ बेलारूस एवं भारत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक विरासत से संबंधित विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान पाया। डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रतिनिधि मण्डल को देसंविवि के उद्देश्यों, उसके शैक्षिक दर्शन और भारतीय संस्कृति की समृद्धि के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी यूरोपीय दल से चर्चा करते हुए और प्रेम बाबा को सम्मानित करते हुए

जस्टआन्सर के सीईओ से मुलाकात

वैश्विक शिक्षा संस्थानों के साथ हुए अनुबंध

ऑस्ट्रेलिया की लाइन मोंक प्रा.लि. के साथ

6 मार्च 2025 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय शान्तिकुञ्ज और लाइन मोंक प्रा.लि. ऑस्ट्रेलिया के बीच एक महत्त्वपूर्ण समझौता हुआ। इससे जहाँ विश्वविद्यालय के शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों को नई दिशा मिलेगी, तो वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में नैतिक और समाजोपयोगी तकनीकी विकास को बढ़ावा दिया जायेगा। इस समझौते पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और लाइन मोंक प्रा. लि. के निदेशक श्री गौरव खन्ना ने इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

लाइन मोंक प्रा. लि. के निदेशक श्री गौरव खन्ना और आद. डॉ. चिन्मय जी दस्तावेजों का आदान-प्रदान करते हुए

लाइन मोंक प्रा. लिमिटेड मेलबर्न ऑस्ट्रेलिया की अग्रणी तकनीकी कंपनी के रूप में प्रसिद्ध है। प्रस्तुत एमओयू के अनुसार यह कंपनी देसंविवि के छात्रों को नवीनतम तकनीकी ज्ञान प्रदान करते हुए उन्हें समाजोपयोगी और नैतिक दिशा में प्रशिक्षित करेगी। यह अनुबंध अगले तीन वर्षों के लिए किया गया है।

केआईवाई रूस के साथ शैक्षणिक अनुबंध

5 मार्च 2025 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज और रूस के कालिनिनग्राद इंस्टिट्यूट ऑफ योगा (केआईवाई) के बीच एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक अनुबंध हुआ है। इस अनुबंध के आधार पर दोनों संस्थानों द्वारा वैदिक ज्ञान, आयुर्वेद, योग और मनोविज्ञान के क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित की जाएँगी। अनुबंध पर देसंविवि के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और केआईवाई, रूस के प्रमुख इगोर पोल्तावसेव ने हस्ताक्षर किए।

इस समझौते के अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त रूप से नवाचारी शैक्षणिक संसाधनों का विकास करेंगे और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों, सम्मेलनों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे। परस्पर शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विशेषज्ञता के आदान-प्रदान के माध्यम से वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयास किए जाएँगे।

अब ज्योति कलश यात्रा से आलोकित होगी रूस की भी धरा

इन दिनों अखण्ड ज्योति के प्राकट्य और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में देश-विदेश में ज्योति कलश यात्राएँ निकाली जा रही हैं। यह यात्रा अब रूस में भी आरंभ हो रही है।

रूस से आए 16 सदस्यीय दल ने अपने देश में ज्योति कलश यात्रा निकालने के लिए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से 9 मार्च को तीन शक्ति कलश और आवश्यक प्रेरणा, मार्गदर्शन प्राप्त किए। इस अवसर पर श्रद्धेयद्वय ने रूस से आए युग सृजेताओं को इन शक्ति कलशों के सान्निध्य में मास्को, कालीनिनग्राद और फीयोदोसिया में विराट गायत्री महायज्ञ के आयोजन के लिए सहमति प्रदान की है।

श्रद्धेयद्वय से प्राप्त तीनों शक्ति कलशों की शान्तिकुञ्ज में बैण्ड, शंख, घंटा के निनाद के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई। प्रतिनिधि मण्डल की बहिनों ने शक्ति कलशों को मस्तक पर धारण कर शोभायात्रा की अगुवाई की।

शान्तिकुञ्ज में निकाली गई रूस में आयोजित होने वाले गायत्री महायज्ञों के लिए पूजित शक्ति कलशों की शोभायात्रा

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्र को रूस में होने वाले सभी कार्यक्रमों के समन्वयन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। आए हुए प्रतिनिधि मंडल को इस हेतु प्रशिक्षण भी दिया गया।

शैक्षिक भ्रमण पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय आए छत्तीसगढ़ एवं नेपाल के विद्यार्थी

अपनी समृद्ध आध्यात्मिक विरासत के अग्रदूत बनने की प्रेरणा पाई

जीवन विद्या का आलोक केन्द्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए समर्पित शिक्षा नीति और समृद्ध आध्यात्मिक वातावरण के कारण पूरे देश के युवाओं के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इसी क्रम में संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) से 25 विद्यार्थी एवं नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों से आए 50 युवाओं का दल शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय आया।

दोनों दल के सदस्यों ने माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट की। डॉ. पण्ड्या जी ने उन्हें मानवीय उत्कर्ष की बहुमूल्य प्रेरणाएँ दीं। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों को शिक्षा, संस्कृति और समाज निर्माण में सक्रिय भागीदारी करते हुए अपनी महान संस्कृति के अग्रदूत बनने के लिए प्रेरित किया।

अतिथि दल ने विश्वविद्यालय स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में दर्शन-ध्यान करते हुए विशिष्ट दिव्यता की अनुभूति की। इस दिव्य वातावरण में उनमें अपनी समृद्ध आध्यात्मिक धरोहर से जुड़ने के भाव जगे। नेपाल से आए युवाओं ने शान्तिकुञ्ज के साधना शिविर में भी भाग लिया।

शान्तिकुञ्ज आए महामण्डलेश्वर महंत रामसुंदर दास जी

5 मार्च को छत्तीसगढ़ के दूधाधारी मठ के महामण्डलेश्वर राजेश्री महंत रामसुंदर दास शान्तिकुञ्ज पधारे। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी तथा श्रद्धेया शैल जीजी के साथ उनकी युवा कल्याण, व्यसनमुक्ति, गौवंश वृद्धि जैसे कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004, 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.03.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26